JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"डी.एड. के प्रषिक्षणार्थियों का समायोजन में अध्ययन"

शौधार्थी
पूजा कुमार
मायादेवी शिक्षा महाविद्यालय, देवास(म.प्र.)

प्रस्तावना

एडमस की दृष्टि में: ''षिक्षा दो ध्रुवीय प्रक्रिया है। ''

प्रथम ध्रुव के रूप में विद्यार्थी (सीखने वाला) तथा द्वितीय ध्रुव के रूप में षिक्षक (सीखने वाला) किन्तु वर्तमानल षिक्षण प्रक्रिया में तीन ध्रुव है–षिक्षक, षिक्षार्थी तथा विषय वस्तु (पाठ्यक्रम) इन तीनों के बीच निरंतर आदान–प्रदान होता हैं आदान प्रदान की यह प्रक्रिया ही षिक्षण प्रक्रिया है,षिक्षण कार्य में सफल होने के लिए किसी षिक्षक में दो विषेषताओं का होना आवष्यक है, (अ) विषय वस्तु का ज्ञान (ब) षिक्षण के प्रति अपनी विधेयात्मक अभिरूचि जब षिक्षक को षिक्षण के प्रति अभिरूचि होगी, तभी वह षिक्षा को मानव के सर्वागीण विकास हेतु मानकर अध्ययन–अध्ययपन करेगा यदि षिक्षक ज्ञानी है परन्तु उसे षिक्षण में अभिरूचि नहीं है तो उसके ज्ञान का वास्तविक उपयोग नहीं हो पायेगा । षिक्षा जगत में षिक्षण प्रक्रिया को सफल बनाने में अध्ययपक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

अध्यापक महत्व को ध्यान में रखते हुए भारतीय षिक्षा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में इस संदर्भ को लिखा कि ''भारत के भविष्य का निर्माण कक्षाओं में होता है'' षिक्षा के बारे में विचार करते समय ये मुख्य प्रष्न प्रष्न उठते है कि क्या सिखाया जाय? क्यों सिखाया जाए और केसे सिखाया जाय? इन प्रष्नों 'क्या' तथा 'क्यों' प्रष्न का उत्तर समाज, समष्टि व राष्ट्र वर्ग आवष्यकताओं पर निर्भर करता है, जबकि कैसे पढ़ाया जाय? इस प्रष्न का उत्तर समाज या राष्ट्र पर निर्भर न होकर मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित होता है। अर्थात् कैसे पढ़ाया जाय यह षिक्षण विधियों पर निर्भर करता है । षिक्षा के इस उद्देष्य को मूर्त रूप देने के लिए अध्ययपक प्रषिक्षण आवष्यक हो जाता है, कि वह अपने आपको उन नवीन भूमिकाओं के लिए किस प्रकार तैयार करे ! विद्यार्थियों के लिए षिक्षण के उद्देष्यों को प्राप्त कर सके। शैक्षिक व्यवस्था की सफलता मूलतः षिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है । षिक्षण के उद्देष्यों को प्राप्त करने के लिए छात्र प्रषिक्षण दिया जाता है । जिसमें छात्र की क्षमताओ को विकसित करने के लिए सार्थक ढंग से प्रयास किया जाता है।

षिक्षा का अर्थः

षिक्षा शब्द से हम सब भली भांति परिचित है, षिक्षा उतनी ही प्राचीन है जितनी की मानव जाति, सभ्यता के प्रारंभ से ही षिक्षा मानव समाज एवं मानव जीवन के लिए बहुत अधिक आवष्यक समझी गई है, षिक्षा के द्वारा हमारे व्यवहार में परिवर्तन होता है । षिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों एवं समाज का विकास होता है।

षिक्षा शब्द का प्रयोग प्रायः तीन रूपों में किया जाता है (1) ज्ञान के लिए (2) एक विषय के लिए तथा (3) व्यवहार में परिवर्तन लाने वाली प्रक्रिया के लिए सभी जगह षिक्षा को एक अध्ययन विषय के रूप में माना गया है, इन तीनों रूपों में षिक्षा का तीसरे रूप में प्रयोग करना ही उचित है। वास्तव में जब हम षिक्षा के अर्थ की बात करते हैं, तब हम षिक्षा के इसी तीसरे रूप की बात करते हैं।

षिक्षा शब्द अपने शाब्दिक अर्थ में एक प्रक्रिया का बोध कराता है, यह शब्द संस्कृत की 'षिक्ष' धातु में 'अ' प्रत्यय लगाने से बना है। 'षिक्ष' का अर्थ है– सीखना और सिखाना । इस प्रकार षिक्षा का अर्थ सीखने और सिखाने की क्रिया से होता है ।

षिक्षा के लिए प्रयुक्त होने वाले अंग्रेजी शब्द (म्कनबंजपवद) एजूकेषन पर भी विचार करें तो एजूकेषन शब्द की व्युत्पत्ति लेटिन भाषा के एजुकेटम (म्कनबंजंउ) शब्द से मानी जाती है, यह शब्द (म्द्ध तथा डूको (क्नबव) दो शब्दों से मिलकर बना है ए (म्) का अर्थ है– अन्दर से (क्तूंपदह वनज) और डूको का अर्थ है– आगे बढ़ाना, विकास करना इस प्रकार एजूकेषन से अर्थ बालक की आंतरिक शक्तियों के विकास की क्रिया से ही होता है। ।

''षिक्षा एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो मनुष्य की समस्त जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक एवं विरोधहीन विकास में योग देती हे, सामाजिक वातावरण के साथ अनुकूलन प्राप्त करने में उसकी सहायता करती है। उसके व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास करती है। षिक्षा उसके विचार एवं व्यवहार में ऐसा परिवर्तन करती है, जो उसके अपने तथा समाज के लिए हितकर होता है,''

महात्मा गांधी के अनुसार– ''षिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा के उत्कृष्ट एवं सर्वांगीण विकास से है।''

रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार– ''षिक्षा काअर्थ मस्तिष्क को इस योग्य बनाना है कि वो सत्य की खोज कर सके तथा उसको व्यक्त कर सके।

षिक्षण–

षिक्षण की प्रक्रिया निष्चित रूप से अध्यापक षिक्षा पर निर्भर है, क्योंकि अध्यापक षिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा भावी अध्यापकगण निहित कौषल तथा तकनीकों से परिचित हो सकते है और उनकें दक्षतार्जन करते हुए अपेक्षित षिक्षण व्यवहारों को आत्मसात् करने में सक्षम हो पाते हैं।

षिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिस पर प्रत्येक देष की शासन प्रणाली, सामाजिक दर्षन, सामाजिक परिस्थितियों मूल्यों एवं संस्कृति का प्रभाव पड़ता है जिस देष में जैसी शासन प्रणाली या सामाजिक तथा औद्योगिक परिस्थितियां होगी वहॉ उसी प्रकार की 'षिक्षण' प्रक्रिया होगी ।

बर्टन (1969)–ने षिक्षण को व्यापक रूप देते हुए कहा कि यह उत्प्रेरण मार्गदर्षन, निर्देषन तथा प्रोत्साहन से संबंधित प्रक्रिया है जो अधिगदिष्ट है, अर्थात् षिक्षण के माध्यम से अधिगम को उत्प्रेरित, निर्देषित मार्गदर्षित और प्रोत्साहित करने के लिए प्रयास किया जाता है। व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक यह मानकर चलते हैं, कि षिक्षण तथा अधिगम दोनों परस्पर घनिष्ठ रूप से संबंधित प्रक्रिया है,और यदि अधिगम नहीं हो पा रहाहै, तो षिक्षण का होना भी वे स्वीकार नहीं करते हैं, क्योंकि अधिगम या सीखने के लिए तथा सिखाने के उद्देष्य से ही षिक्षण का कार्य किया जाता है।

एन.एल.गेज– ''षिक्षण एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्देष्य है दूसरे व्यक्ति के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाना है।

षिक्षण की भी एक प्रक्रिया है,जिसका मूलोद्देष्य जैसे भी संभव हो संबंधित विषय वस्तु को विद्यार्थियों को आत्मसात् कराना है । इस दृष्टि से कुषल षिक्षकके पास एक नहींएक से अधिक अनेक विकल्प हो सकते हैं, उसकी कुषलता इसी में है, कि कक्षागत परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उनमें से सर्वाधिक प्रभावी विकल्प का चयन वह स्वयं कर सके यही उसकी शैक्षणिक कुषलता है।

क्लॉक के अनुसार– ''षिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके प्रारूप तथा संचालन की व्यवस्था इसलिए की जाती है कि छात्रों के व्यवहारों में परिवर्तन लाया जा सके। ''

योकम तथा सिम्सन–''षिक्षण का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा समूह के लोग अपने उप परिपक्व सदस्यों का जीवन से सामंजस्य स्थापित करना बताते हैं।

षिक्षण का अर्थ होता है–सिखाना, सूचना देना, संबंध स्थापित करना, मार्गदर्षन करना, प्रेरित करना, वातावरण से समायोजन करना आदि षिक्षण का स्वरूप होता है ।

वांछनीय सूचना देना, अच्छा सिखाना, चुनी हुयी बातों का ज्ञान देना, सहानुभूतिपूर्ण सहयोगपर आधारित षिक्षण प्रजातांत्रीय प्रगतिषील गुणकारी योगना पर आधारित निर्देषात्मक आदि षिक्षण के सिद्धान्तों की विषेषताएं हैं।

षिक्षण के तीन चर होते हैं– (1) आश्रित चर (2) स्वतंत्र चर (3) हस्तक्षेपी चर आदि जिनके द्वारा कोई भी अनुक्रिया या व्यवहार जो विभिन्न पद या उपाधि ग्रहण कर सकता है।

षिक्षण की अवस्थाएं तथा क्रियाएं जैक्सन(1966) के अनुसार षिक्षण प्रक्रिया को वैज्ञानिक ढंग से निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है– (1) पूर्व क्रिया अवस्था (2) अन्तक्रिया अवस्था (3) उत्तर क्रिया अवस्था ।

षिक्षण प्रक्रिया को निम्नलिखित कारक प्रभावित करते हैं षिक्षण, उद्देष्य, वैयक्तिक भिन्नता, नियोजित कार्य, कक्षाकी संवेगात्मक स्थिति, परिणाम की शीघ्र जानकारी, भौतिक साधन तथा शैक्षिक सामग्री, षिक्षक का व्यक्तित्व तथा कुषलता प्रभावित करते हैं।

षिक्षण प्रषिक्षण की अवधारणा

सम्पूर्ण विष्व में षिक्षण के कार्य को एक श्रेष्ठ कार्य या व्यवसाय माना गया है, समाज की श्रेष्ठतम विभूतियों ने इस पुनीत कार्य को ग्रहण किया है, धार्मिक प्रवृत्ति वाले व्यक्त्यिों एवं समाज सुधारकों ने भी इस कार्य की उत्तमता को अंगीकार किया है, महात्मा बुद्ध, ईसा, गांधी, सुकरात, आदि दार्षनिक मानव जाति के सच्चे षिक्षक थे । ऐसे महान दार्षनिकों एवं षिक्षा शास्त्रीयों का अनुकरण करके आज के षिक्षक अपने राष्ट्र को उन्नति के षिखर परपहुंचा सकते हैं तथा बालकों का मार्गदर्षन कर सकते हैं यही कारण है कि अध्यापक प्रषिक्षण का उन्नयन एवं प्रसार आज की महती आवष्यकता बन गया है।

अध्यापक षिक्षा इस व्यापक प्रणाली के अंतर्गत आने वाली एक लघु प्रणाली होने के कारण षिक्षा के व्यापक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अवष्य ही निर्दिष्ट होती है, विभिन्न स्तरों पर आध्यापक षिक्षा की व्यवस्था की जाती है ताकि पूर्व प्राथमिक से लेकर उच्चत षिक्षा के क्षैत्रों में कुषल अध्यापकों की उपलब्धि सुनिष्चित करना संभव हो सके ।

प्रषिक्षण वह सम्प्रेषण व्यवहारहै जिसमें आचरण तथा व्यवहार में परिवर्तन पर अधिक बल दिया जाता है तथा उसके लिए प्रयास और अभ्यास को अधिक महत्व दिया जाता है जबकि ज्ञान और उसके विष्वास को बदलने के लिए बौद्विक प्रदषन को कम जरूरी नहीं माना जा सकता है प्रषिक्षण में श्रंखला तथा संकेतात्मक अधिगम को अधकि महत्व दिया जात है जो क्रमषः अनुबंधन की ओर ले जाता है, व्यवहागत और आचरणगत दोनों ही परिवर्तन क्रमषः दिखाई देने लगते हैं । वह सम्प्रेषण व्यवहार जिसके माध्यम से आचरण व्यवहार को बदलने के लिए अधिक और ज्ञान आदि को बदलने के लिए कम प्रयास किया जाता है जिसमें बुद्धि क्षमता का प्रदर्षन कम करना होता है और तर्क विचार आदि के स्थान पर किसी व्यवहार प्रारूप, क्रिया या कौषल आदि को सिखाने के लिए प्रयास किया जाता है,उसे हम प्रषिक्षण की संज्ञा देते हैं।

षिक्षण प्रषिक्षण का संक्षिप्त इतिहास–

षिक्षक–प्रषिक्षण हेतु वुड का घोषणा पत्र तथा स्टेनले का प्रयास सन् 1854 में वुड के घोषणा पत्र ने षिक्षक प्रषिक्षण के विकास पर पर्याप्त बल दिया ताकि तत्कालीन निरक्षरता को साक्षरता में बदला जा सक। घोषणा पत्र के निम्नलिखित शब्द थे– ''प्रषिक्षित अध्यापकों की अपर्याप्तता एवं प्रषिक्षण की अपूर्ण विधि का भारत देष में प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जा रहा है । यहां प्रषिक्षित अध्यापकों के अभाव में अध्यापन कार्य में कठिनाई है हम भारत के प्रत्येक क्षैत्र में षिक्षक, प्रषिक्षण विद्यालयों एवं कक्षाओं के यथाषीघ्र खोले जाने की इच्छा व्यक्त करते हैं । ''

1. हण्टर कमीषन 882 (भारतीय षिक्षा आयोग) के सुझाव– सन् 1882 में हण्टर कमीषन ने विलियम हण्टर की अध्यक्षता में षिक्षक–प्रषिक्षण कें संबंध में निम्नलिखित सुझाव दिये थे ।
2. हर्टाग समिति के सुझाव 1929
3. राधाकृष्णन आयोग के सुझाव
4. आचार्य नरेन्द्रदेव समिति के सुझाव 1939
5. सन् 1947 के पूर्व तथा बाद में षिक्षक–प्रषिक्षण

सर्वप्रथम सन् 1854 में वुड घोषणा पत्र में प्राथमिक अध्यापकों के प्रषिक्षण पर बल दिया गया । कुछ नगरों जैसे– मैरठ, आगरा, वाराणसी में नार्मल स्कूल खोले गये । 1862 मतें अल्मोड़ा में भी एक स्कूल खोला गया ।

अध्यापक प्रषिक्षण के उददेष्यः

1. षिक्षक–प्रषिक्षण के उद्देष्यों में यह आवष्यक है कि अध्यापक अपने षिक्षण कार्य में दक्ष होना चाहिए । पढ़ाने के संबंध में उसकी पूरी तैयारी होनी चाहिए जैसे– उद्देष्य निर्धारण विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण नियम–निर्णय का समन्वयीकरण, सूचीकरण, षिक्षण अभ्यास कार्य तथा प्रयोग आदि। इस प्रकार एक अध्यापक को दक्षता आधारित षिक्षण विधि का प्रयोग करना चाहिए ।
2. एक अध्यापक को षिक्षण करते समय वृहद कक्षा षिक्षण के अनुरूप तथा आधार पर कक्षा में षिक्षण कार्य करना चाहिए ।
3. एक कुषल तथा प्रषिक्षित अध्यापक के लिए बहुकक्षा षिक्षण के संबंध में भी

होना चाहिए ।

4. कुषल अध्यापक के लिए यह भी आवष्यक है कि कक्षा मतें षिक्षण करते समय मैदानिक तथा उपचारात्मक षिक्षण पर विषेष ध्यान दें निदानात्मक परीक्षण छात्रों की कमजोरियों का पता लगाते हैं और उपचारात्मक षिक्षण व्यवस्था छात्रों की विषयगत कमजोरियों को दूर कर उनका मार्गदर्षन करती है।

षिक्षण प्रषिक्षण के प्रकारः

अध्यापक को षिक्षित करने के लिए प्रायः अनेकानेक विषयगत ज्ञान एवं अनुभवों को व्यवहुत करना होता है, दर्षनषास्त्र, मनोविज्ञान, समाजषास्त्र अर्थषास्त्र, इतिहास एवं संस्कृत आदि विषयों के समुचित ज्ञान के अभाव में अध्यापक षिक्षा के क्षैत्र में दक्षता की प्राप्ति में कठिनाई का आना इसकी अन्तविषयक प्रकृति के कारण स्वाभाविक ही है। साथ ही कुषल अध्यापक को तैयार करने के लिए प्रयास किया जाता है । अध्यापक षिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति और मूल्यों के प्रति संचेतना को विकसित किया जाना। जरूरी माना जाता है वही दूसरी और भावी अध्यापक में षिक्षण दक्षता और प्रतिबद्धता के विकास को भी अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

प्रारंभिक अध्यापक षिक्षा स्तर

परिषद के द्वारा प्राथमिक और उच्च प्राथामिक (कक्षा 1 से 5 तथा 6 से 8) को सम्मिलित करते हुए संरचित किया गया और इन दोनों ही स्तरों के लिए प्रस्तावित विषिष्ट उद्देष्य पाठयक्रम आदि को प्रारंभिक स्तर के लिए उपयोगी माना गया । (14–15 वर्ष तक के आयु वर्ग के बच्चों को इस स्तर में रखा गया)

माध्यमिक अध्यापक षिक्षा स्तर

माध्यमिक अध्यापक शिक्षा स्तर (Secondary Teacher Education Level) भारत में कक्षा 9–12 के शिक्षकों के लिए बी.एड. (ठ.म्क.) या 4 वर्षीय एकीकृत बी.ए/ बी.एससी. बी.एड. अनिवार्य करता है। यह स्तर कक्षा 9–10 (माध्यमिक) और 11–12 (उच्चतर माध्यमिक) को कवर करता है, जिसमें विषय विशेषज्ञता,शिक्षण पद्धतियों और व्यावसायिक विकास पर जोर दिया जाता है

उच्च माध्यमिक स्तरीय अध्यापक षिक्षा

इस स्तर पर छात्रों में शारीरिक, मानसिक परिपक्वता की वृद्धि होती है, उनमें अमूर्त चिन्तन, तर्क विचार, लक्ष्य निर्धारण आत्म चेतना और व्यक्तिगत चयन, साथी चेतना सन्दर्भ समूह परिवर्तन के प्रति जागरूकता, नैतिक विचार, परंपरागत विचारों के प्रति चुनौतिपूर्ण व्यवहार, आत्म प्रदर्षन आदि में विषेष रूपान्तरण होता है। अतः इस स्तर के लिए शैक्षिक और व्यावसायिक दो प्रकार के पाठयक्रम की उपयोगिता को व्यावहारिक माना गया ।

व्यावसायिक षिक्षा

व्यावसायिक विषयों के षिक्षण हेतु इस स्तर पर अध्यापक/ अध्यापिकाओ को तैयार करने के लिए इस प्रवाह को संस्तुत किया गया। इस प्रवाह के उद्देष्य निम्न है–आवष्यक ज्ञान प्रदान करने और आवष्यक दक्षता विकसित करने के लिए उनमें योग्यता का विकास करना किसी व्यवसाय में सफल होने के जिन आवष्यक कौषल और मूल्यों का निर्माण करना जरूरी होता हे अध्यापकों में उच्च उत्पादन कौषल और दक्षता का विकास करने के लिए प्रयत्न करना आदि।

पत्रोपाधि (डी.एड.) की संकल्पनाः

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 एवं राष्ट्रीय अध्यापक षिक्षा परिषद द्वारा निर्धारित मापदण्डों के परिप्रेक्ष्य में षिक्षक षिक्षा के अन्तर्गत डिप्लोमा इन एज्यूकेषन (डी.एड.) के पाठयक्रम के माध्यम से ऐसे समर्पित षिक्षक तैयार करने का लक्ष्य है, जो अपनी व्यावसायिक दक्षताओं के साथ–साथ सतत रूप से सीखने की अभिरूचि भी विकसित कर सके । यह पाठयक्रम षिक्षक को विद्यार्थी केन्द्रित एवं षिक्षण विधियों को विद्यार्थियों के सीखने की क्षमता बुद्धि को सुसाध्य बनाने की दिषा में प्रेरक भूमिका अदा कर सके। प्रचलित षिक्षण विधियों की तुलना में उन विभिन्न तरीकों पर अधिक बल दिया जाना चाहिये । जिससे विद्यार्थी अधिक रूचि के साथ सीखते हैं सीखने की पृथक–पृथक क्षमताओं एवं पृथक–पृथक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के लिए एक समान षिक्षण विधियों उपयुक्त नहीं हो सकती अब षिक्षक की भूमिका विविध प्रकारों से ज्ञान के विकास करने वाली ही होगी, जिसके माध्यम से वह षिक्षार्थियों को अनेक शैक्षणिक लक्ष्यों की पूर्ति में मदद कर सके। इस दृष्टि से ज्ञान

वास्तविक अनुभावों, अवलोकनों एवं निष्कषों के अनुभवों पर आधारित हो अर्थात षिक्षा की दृष्टि से सजग प्रयास किए जाने की अपेक्षा की गई है।

उद्देष्यः

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में प्रारंभिक षिक्षा के लिए षिक्षक षिक्षा के निम्नांकित उद्देष्य निर्धारित किये गए हैं।

1. प्रारंभिक षिक्षा की प्रकृति, उद्देष्य, समस्याओं एवं मुददों को समझ सकेंगे, आवष्यकता समाज अनुरूप विद्यार्थी केन्द्रित एवं परिवेष आधारित अधिगम (सीखने) पद्धतियों को विकसित कर सकेंगे।
2. शाला संसाधन विकास के लिए सामाजिक संसाधनों का प्रबंधन एवं संगठन कर सकेंगे।
3. सृजनात्मक षिक्षण सिद्धान्त एवं मूल्यांकन तकनीक का उपयोग कर सकेंगे, जीवन पर्यन्त सीखने की चाहत एवं क्षमता विकसित कर षिक्षा क्षैत्र के अद्यतन विकास क्रम से अवगत हो सकेंगे।
4. समाज के वंचित वर्गो की षिक्षा एवं विद्यालय प्रबंधन में उनकी प्रभावी सहभगिता के प्रति संवेदनषील होकर कार्य करना चाहिए।
5. प्रारभिक षिक्षा के क्षैत्र में षिक्षण सामग्री के निर्माण व प्रयोग की आवष्यकता प्रतिपादित कर सकेंगे।

उक्त लिखित उद्देष्यों, के अतिरिक्त कुछ सामान्य उद्देष्य और हैं, जो भावी डी.एड. प्रषिक्षार्थियों के लिए आवष्यक है।

1. षिक्षा के प्राथमिक स्तर से सम्पर्कित मनौवैज्ञानिक तथा सामाजिक आधारभूत तथ्यों प्रति अवबोध भावी अध्यापक/अध्यापिकाओं में उत्पन्न करना।
2. विषिष्ट आवष्यकता वाले बच्चों की देखभाल हेतु उपयुक्त विधि एवं तकनीकों से भावी अध्यापक/अध्यापिकाओं को परिचित कराना।
3. सामाजिक तथा संवेगात्मक समस्याओं को समझने तथा विष्लेषित करने की क्षमता भावी अध्यापक/अध्यापिकाओं में विकसित करना तथा उनमें सम्प्रेषण संबंधी कौषलों का विकास करना ।
4. पाठय सामग्री क्रियाकलापों का आयोजन करने में सक्षम बनाना। कभी–कभी प्रषिक्षण प्राप्तकर्ता अनेक समस्याओं से घिर जाता है जैसे मानसिक अस्वस्थता, कुण्ठा, द्वन्द, निराषा आदि। ऐसे समय में उसे निर्देषन एवं परामर्ष की आवष्यकता होती है।

डी.एड. प्रषिक्षण कैसेः

षिक्षण अभ्यास के संदर्भ में अधोलिखित निर्देषों का पालन अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए–

1. प्रत्येक प्रषिक्षणार्थी को प्रथम वर्ष में दो समालोचना पाठ पढ़ाना होगा।
2. प्रत्येक प्रषिक्षणार्थियों को षिक्षण अभ्यास के समय कक्षा के षिक्षण का अभ्यास अवष्य दिया जाता है, तथा उनको उसके लिए उचित मार्गदर्षन प्रदान किया जाता है।
3. षिक्षण कार्य को पूर्व रूपेण समझने तथा षिक्षण कौषल को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक छात्राध्याक को प्रतिविर्ष 50 कार्य दिवस का षिक्षा में इंटनर्षिप कार्य करवाया जाता है।
4. प्रत्येक प्रषिक्षणार्थियों को पाठय सहायक सामग्री के कम से कम 10 उच्च स्तर के नमूने प्रथम वर्ष में तथा 10 नमूने द्वितीय वर्ष में अनिवार्य रूप से तैयार करना होता है।
5. छात्राध्यापक को प्रथम वर्ष में श्यामपट लेख तथा ड्राइंग का अभ्यास कराया जाता है।
6. प्राथमिक स्तर पर षिक्षा का एक मुख्य उद्देष्य समाज के साथ सामंजस्य (समायोजन) विकसित करना।

औचित्य

अध्यापक महत्व को ध्यान में रखते हुए भारतीय षिक्षा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में इस संदर्भ को लिखा कि ''भारत के भविष्य का निर्माण कक्षाओं में होता है''। छात्र प्राचार्य अभिभावक तथा समाज के साथ अध्यापक अपना सामंजस्य (समायोजन) किस प्रकार स्थापित करना है इसकी षिक्षा उसे डी.एड. प्रषिक्षण में दी जाती है। जिसके द्वारा वह समायोजन करता है। समायोजन से संबंधित हर क्षैत्र में शोध कार्य किये गये हैं। परन्तु डी.एड. प्रषिक्षण में समायोजन से डी.एड. के विद्यार्थियों के प्रषिक्षण के प्रषिक्षण में समायोजन को लेकर शोधकर्ता द्वारा विषय का चुनाव किया गया है।

समस्या कथन

''डी.एड. के प्रषिक्षणार्थियों का समायोजन में अध्ययन'' ।

उद्देष्य

पुरूष एवं महिला डी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के समायोजन एवं उसके पक्षें की तुना करना।

परिकल्पना

पुरूष एवं महिला डी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के समायोजन एवं उसके पक्षों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सीमांकन

''डी.एड. के विद्यार्थियों का समायोजन में अध्ययन ''मायादेवी कॉलेज एवं न्यू ऐरा कॉलेज देवास के विद्यार्थियों को ही न्यादर्ष हेतु सम्मिलित किया गया ।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में डॉ. श्रीमती ललिता शर्मा द्वारा तैयार की गई समायोजन प्रश्नावली (Indian Adaptation of bettr Adjustment Inventory) प्रयोग में लाई गई। प्रस्तुत प्रश्नावली में 80 कथन (प्रश्न) है जो भिन्न–भिन्न क्षैत्र से हैं प्रथम क्षैत्र गृह समायोजन है जिसके अंतर्गत 20 पद दिए गए है। द्वितीय क्षैत्र सामाजिक समायोजन है जिसके अंतर्गत 20 पद दिये गये हैं। तृतीय क्षैत्र संवेगात्मक समायोजन है जिसके अंतर्गत 21 पद है अंत में चतुर्थ क्षैत्र में स्वास्थ्य समायोजन है जिसके अंतर्गत 18 पद दिये गये । सम्पूर्ण प्रश्नावली वेब है जिसे पूर्ण करने का समय लगभग 40 मिनिट है।

प्रदत्त संकलनः

सर्वप्रथम उद्देश्य की प्राप्ति हेतु डी.एड. कॉलेजों के प्राचार्यो से मिलकर अनुमति एवं प्रदत्त संकलन हेतु मिलने का समय लिया गया । तत्पश्चात् प्रशिक्षार्थियों से मिलकर उन्हें प्रश्नावली दी गई एवं निर्देश दिये गये, निर्देष देने के पश्चात उन्हें प्रश्नावली अतिशीघ्र भरने को कहा गया ।

प्रदत्त विश्लेषणः

प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण डए ैक एवं ज परीक्षण द्वारा किया गया ।

निष्कर्षः

1. पुरूष एवं महिला डी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के कुल समायोजन के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. पुरूष एवं महिला डी.एड. प्रषिक्षणार्थियों के गृह समायोजन का स्तर समान पाया गया ।
3. पुरूष एवं महिला डी.एड. प्रषिक्षार्थियों के स्वास्थ्य समायोजन का स्तर समान पाया गया ।
4. पुरूष एवं महिला डी.एड. प्रषिक्षार्थियों में समान सामाजिक समायोजन पाया गया ।
5. पुरूष एवं महिला डी.एड. प्रषिक्षार्थियों कें संवेगात्मक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया ।

शैक्षिक निहितार्थः

प्रस्तुत अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया कि राष्ट्रीय अध्यापक षिक्षा परिषद द्वारा चलाई जाने वाली डी.एड. (डिप्लोमा इन एजुकेषन) के पाठ्यक्रम के माध्यम से प्रषिक्षार्थियों में विद्यार्थी षिक्षक, समाज तथा षिक्षक व शैक्षणिक विधियों में कितने समायोजन कर सकता है, तथा इस पाठयक्रम की सफलता विद्यार्थियों के स्तर को उठाने में कितनी सहायक है, आगे भी इस प्रकार के पाठयक्रमों को योजनाओं को सुलभ रूप से संचालित किया जा सकता है।

आगामी अध्ययन हेतु सुझावः

1. प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन हेतु केवल डी.एड. प्रषिक्षार्थीयों का चयन किया गया है इसी तरह से बी.एड. प्रषिक्षार्थियों का चुनाव भी किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत अध्ययन केवल देवास शहर के दो महाविद्यालयों तक सीमित है अतः इण्स कार्य हेतु अन्य महाविद्यालयों का भी चुनाव किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के पारिवारिक, सामाजिक, संवेगात्मक और स्वास्थ्य का अध्ययन कई और पक्ष भी है उन्हें पता लगाकर उन पर अध्ययन कार्य किया जा सकता है।

4. प्रस्तुत अध्ययन में केवल देवास शहर ही शामिल किया गया इसी तरह यह अध्ययन शासकीय महाविद्यालय को लेकर किया जा सकता है एवं प्रायवेट षिक्षा महाविद्यालय एवं शासकीय षिक्षा महाविद्यालय के डी.एड. प्रषिक्षार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता हैं
5. समायोजन का अन्य चरों के साथ भी समायोजन किया जा सकता है।

परिशिष्ट
अनुमति पत्र की छायाप्रति
उपकरण की छायाप्रति

संदर्भ सूची

अग्निहोत्री डॉ. कल्पना (2010) : षिक्षा में निर्देषन एवं परामर्ष के मूल तत्व, आर.एस.ए. इंटरनेषनल, आगरा।

भटटाचार्य डॉ. जी.सी. (2010–11) : अध्यापक षिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेषन संजय पेलेस, आगरा.

किषोर डॉ. अवधेष (2009) : प्राथमिक स्तरपर षिक्षा के कार्य, अग्रवाल पब्लिकेषन, आगरा

शर्मा प्रो.बी.एन. (2010) : षिक्षा के दार्षनिक आधार तथा मूल्यांकन प्रक्रिया, राधा प्रकाषन मन्दिर आगर

शर्मा ओ.पी. (2007) : उभरते हुए भारतीय समाज में षिक्षा विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

शर्मा श्रीमती राजकुमारी (2010) : शिक्षण के सिद्धान्त राधा प्रकाषन मन्दिर आगरा

शर्मा श्रीमती राजकुमारी (2004) : प्रारंभिक षिक्षा के उभरते आयाम एवं शैक्षिक मूल्यांकन

सिंह डॉ. मया शंकर (2007) : अध्यापक षिक्षा की चुनौतियां अध्ययन पब्लिषर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली.

केसरी सुश्री महालक्ष्मी (पृष्ठ 48–52) : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापकीय गुणवत्ता में हास

मुछाल डॉ. महेष कुमार (पृष्ठ 102–103) : अध्यापक प्रषिक्षण में इंटर्नषिप

सक्सेना प्रो. उदयवीर ( )